जीवन विद्या राष्ट्रीय संगोष्ठी, नागौद

21-23 दिस. 1996

21 से 23 दिस. 96 की त्रिदिवसीय संगोष्ठी का आयोजन बाबा ए. नागराज की अध्यक्षता में अवधेश श्रीवास्तव जी के आतिथ्य में हुआ। इस संगोष्ठी में देश के विभिन्न क्षेत्रों में जीवन विद्या के आधार पर कार्यक्रम कर रहे व्यक्तियों ने भाग लिया। संलग्न-1 में वर्णित समय सारणी के आधार पर विभिन्न वस्तुओं पर चर्चा हुई। स्वागत व परिचय के बाद बाबा का उद्‌बोधन हुआ।

बाबा ने विद्या के कार्य में जुड़े लोगों के **समझ की एकरुपता** की सुनिश्चितता पर बल दिया। दर्शन, वाद और शास्त्र में एक रुपता आवश्यक है। चिन्तन, कार्ययोजना व फल में एकरुपता भी स्वाभाविक है। विभिन्न क्षेत्रों में परिस्थिति जन्य आवश्यकताओं के आधार पर चलाये जा रहे कार्य योजनाओं में भिन्नता हो सकती है, परंतु चिन्तन और प्राप्त फल में एकरुपता होगी ही। चिन्तन का आधार अस्तित्वमूलक सहअस्तित्ववादी मानव केन्द्रित चिन्तन ज्ञान है और फल स्वतंत्रता और स्वराज्य अर्थात् निरन्तर सुख से जीने की मानवीय परंपरा है। (समझ की एकरुपता सुनिश्चित करने की दृष्टि से वर्ष में दो बार मई-जून व दिसम्बर में 10-10 दिवसों की शिविर विद्या से गंभीरता से जुड़े लोगों को रखने का निर्णय किया गया। प्रथम शिविर 22 से 31 मई 97 अमरकंटक में होना निश्चित हुआ।)

गणेश जी ने संगोष्ठी के प्रयोजन को स्पष्ट किया 1. समझ की एकरुपता एवं परस्पर विश्वास और 2. जीवन विद्या के लोक व्यापीकरण के लिए कार्य योजन भागीदारी व सहयोग के लिए आधार तैयार करना सुनिश्चित करना। इस संगोष्ठी का उद्देश्य है। (परस्पर मैत्री व लोक व्यापीकरण की कार्य योजना व परस्पर भागीदारी को सुनिश्चित करने की दृष्टि से वर्ष में दो बार मार्च अप्रेल व सितम्बर-अक्टुबर में राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया जाए ऐसा निर्णय किया गया। अगला सम्मेलन सितम्बर 97 माह में भिलाई में आयोजित किया जाना तय हुआ)

सत्यजी व गणेश जी ने विद्या के लोक व्यापीकरण के लिए संभावित कार्य योजना व अपेक्षित भागीदारी का विस्तृत प्रारुप प्रस्तुत किया जो संलग्नक-2 में वर्णित है। इस संभावित कार्य योजना के तहत विभिन्न क्षेत्रों से आये लोगों ने अपने यहाँ चल रहे कार्यक्रमों का विवरण लोगों की भागीदारी, आगे के कार्यक्रम व अपेक्षित सहयोग का विवरण प्रस्तुत किया।

भिलाई के अरुण साहनी जी वहाँ चल रहे शिविरों, शिविरों के पाठ्यक्रम का विकास, विद्या के आधार पर शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम व मानवीय संविधान व्यवस्था का रुपप्रारुप तैयार करने के लिए चल रहे कार्यों के बारे में बताया व उसमें सभी की भागीदारी आमंत्रित की। विज्ञान, तकनीकी, स्वास्थ्य-संयम आदि विभिन्न आयामों को विद्या के आधार पर विकसित करने की आवश्यकता पर भी उन्होने जोर दिया व भिलाई के लोगों की भागीदारी की आश्वस्तता दी। नंदिनी नगर में एक विद्यालय शुरु करने की संभावना उन्होने स्पष्ट की। उन्होने प्रचलित शिक्षा में नैतिक शिक्षा के पाठ्यक्रम जीवन विद्या के आधार पर विकसित कर उसे लागू करने की आवश्यकता को भी स्पष्ट किया और उनके द्वारा प्रारंभ किये गये प्रयासों के बारे में बताया।

नागौद से सिन्धु चाचा ने सिंहपुर में केन्द्र के माध्यम से कार्य शुरु करने की बात कही। नागौद में शिविरों की श्रृंखला शुरु करने के लिए वातावरण तैयार है।

झाबुआ से श्रीवास्तव जी ने वहां के चल रहे कार्यक्रमों व आगे की संभावनाओं को स्पष्ट किया। विद्या के प्रति लोगों का उत्साह है। शिविरों में ग्रामीणों व जन प्रतिनिधियों को शामिल करने का प्रयास चल रहा है डी.पी.ई.पी. के अन्तर्गत प्राइमरी शिक्षा में पूरी तरह से नया पाठ्यक्रम लागू करने के लिए आवश्यक तैयारी चल रही है। पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक आदि विकसित करने का कार्य प्रगति पर है। जल प्रबंधन परियोजना में सामाजिक विकास का कार्य जीवन विद्या की समझ के आधार पर किया जाना तय है। इन कार्यों के संचालन के लिए जीवन विद्या समिति का भी गठन किया गया है। झाबुआ में शिविरों के संचालन व पाठ्यसामग्री, शिक्षक-निर्देशिका आदि तैयार करने के लिए सभी पारंगत व्यक्तियों की भागीदारी अपेक्षित है।